'kk/k&iLrko

[kkjBk xhrk e vydkj ;ktuk % ,d v/;;u

ih,p0 Mh0 mikf/k gr iLrkfor 'kk/k dh :ijs[kk

LukrdkÙkj [kkjBk foHkkx

ldk; % tutkrh; ,o {k=h; Hkk"kk

jkph fo'ofo|ky;] jkph

o"k % 2025

शोध निर्देशक

डॉ0 अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग
डोरन्डा महाविद्यालय, राँची।

शोधकर्त्ता

सुमित भारती
एम0ए0 खोरठा
यू0जी0सी0 नेट
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
खोरठा राँची विश्वविद्यालय, राँची।

[kksjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk ,d v/;;u

izLrkouk&

किसी भी देश का साहित्य उसके वाह्य जीवन राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियों का विवरण मात्र नहीं होता है, बल्कि राष्ट्र के साहित्य इतिहास का अध्ययन उस देश के समाज के आर्थिक तथा मानसिक विकास से सुपरिचित करता है। साहित्य मनोवेगों की सृष्टि करता है। उसमें साहित्य का वाणी और अर्थ का वैभव समावेश होता है। समाज का उत्थान–पतन उसकी विचार धारा तथा उसकी चेतना के विकास का स्रोत जानने के लिए साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। हजारों वर्ष की दबी भावनाएं अनुभूति तथा सुख–दुख से संबंध विचार श्रृंखलाएं साहित्य के माध्यम से समझी जा सकती है।

ऐतिहासिक झारखण्ड प्रदेश जो प्राचीनकाल से दक्षिणारण्य का उत्तरी पूर्वी भाग है और अर्क खण्ड, कर्क खण्ड, नागदेश, नागपुर आदि कई नामों से विख्यात रहा है। यह भाषा, साहित्य और संस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध एवं महत्वपूर्ण है इस प्रदेश में आर्य, द्रविड और आग्नेय तीनों परिवारों की भाषाएं बोली जाती है।

इन सभी भाषाओं के बोलने वाले सदान और आदिवासी जातियों का सांस्कृतिक समन्वय भी अनुपम ही है। झारखण्डी भाषाओं में अधिकांश का गीत–साहित्य अपने भाव–विन्यास तथा अभिव्यंजना–शिल्प में विशिष्ट और मनोमय है। इस गुणवत्ता के बावजुद ये भाषाएँ और उनके साहित्य सदियों से उपेक्षित रहे है।

साहित्य के विविध विद्याओं यथा–पद्य, गद्य एवं नाट्य विद्या के अतंर्गत समाहित कविता, गीत, निबंध, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, शब्द–चित्र, लघुकथा

आदि इन भाषाओं में लिखे गए है। संप्रति इसकी लिपि सर्वमान्य देवनागरी है। इसका लोक साहित्य में सिर्फ खोरठा क्षेत्र अपितु समस्त झारखण्ड क्षेत्र का अक्षय भंडार रहा है। ^^[kksjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk% ,d v/;;u*’ इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

वर्तमान में खोरठा भाषा का आधुनिक साहित्य समृद्ध है। खोरठा की पहली मासिक पत्रिका के रूप में ''मातृभाषा'' श्रीनिवास पानुरी के संपादन में जनवरी 1957 ई0 में धनबाद से प्रकाशित हुआ। 1957 ई0 में आकाशवाणी केन्द्र राँची और 1980 ई0 में राँची विश्वविद्यालय, राँची में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना हुई। जिससे दिन प्रतिदिन नए–नए खोरठा कवि, लेखक, गायक एंव रचनाकारों का उदय होता चला आया और खोरठा भाषा–साहित्य भी अपने विकास में अग्रसर होता चला आया। परिणामतः खोरठा भाषा साहित्य की तमाम साहित्यिक विधाओं में शोध कार्य जारी है।

खोरठा आर्य परिवार की भाषा है। अन्य झारखण्डी भाषाओं की अपेक्षा ईसका गीत–साहित्य अधिक सम्पन्न है। खोरठा उत्तरी छोटानागपुरी के सदानों की मातृभाषा और सदानेतर आदिवासियों की सम्पर्क भाषा है।

खोरठा गीतों में अलंकार योजना के अध्ययन से सदान जातियों की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्पराओं तथा विशेषताओं का उद्घाटन तो होगा ही साथ ही साथ उत्तरी छोटानागपुर के इतिहास में एक नये अध्याय का सुत्रपात भी होगा।

यह शोध अलंकारात्मक है। वस्तुत खोरठा अलंकारों के इस विश्लेषणात्मक अध्ययन से खोरठा भाषा साहित्य और संस्कृति के महत्वपूर्ण तथ्यों के उजागर होने

की सम्भावना है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है– विश्लेषणात्मक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त करना।

'kks/k dh ifjdYiuk

विभिन्न विषयों एंव भाषाओं के समान ही झारखण्ड के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में भी शोध कार्य किए जा रहे है। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि शोधकर्त्ताओं की रूची खोरठा भाषा साहितय में बढ़ी है एवं शोधकर्त्ताओं के द्वारा खोरठा भाषा साहित्य के विभिन्न विषयों में शोध किए जा रहे है। शोध की परिकल्पना किसी भी शोध कार्य की नीव होती है, अर्थात् परिकल्पना शोध कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में अहम भूमिका निभाती है। परिकल्पना का अर्थ ही शोध कार्य से पूर्व की जाने वाली चिंतन से होती है। यह शोध कार्य से सम्बंधित ऐसी विधा है जिससे किसी भी शोध विषय के समस्या से लेकर समाधान तक का ज्ञान पूर्व में ही हो जाता है। [kkjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk % ,d v/;;u के द्वारा उनके चिंतन एंव विभिन्न पक्षों के अध्ययन के फलस्वरूप साहित्य के विभिन्न पहलुओं को जानने एवं समझने का प्रयास किया जाएगा।

'kks/k dh izsj.kk

मेरा जन्म झारखण्ड के उत्तरी छोटानागपुर के बोकारो जिला में हुआ है एवं मेरा रहन–सहन, पठन–पाठन ग्रामीण क्षेत्रों में ही हुआ है। यही कारण है कि मेरा जीवन ग्रामीण स्थिति और परिस्थिति से जुड़ा है। मेरी मातृभाषा खोरठा है और मैंने अपनी 12 वीं में वैकल्पिक रूप में खोरठा भाषा का चयन किया, साथ–ही–साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर खोरठा भाषा से अध्ययन करने के बाद मुझे ऐसा प्रतीत

होने लगा कि मैं भी खोरठा भाषा विषय को लेकर कुछ कार्य करूँगा। जिससे खोरठा भाषा साहित्य एवं कला संस्कृति और अधिक समृद्व एंव विस्तृत हो सके।

मैं बचपन से ही अपने परिवार में दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहन एवं अपने आस–पास के परिवेश से मुहाबरा, लोकाक्ति, पहेली, लोकगीत, लोककथा, चुटकुले, आदि सुनते आ रहा हूँ।

जब मैं खोरठा विषय पर पढ़ाई करना प्रारंभ किया तो मुझे पुराने एवं नये कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि तथा विभिनन साहित्यकारों, लेखको एवं कवियों के विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन्ही पुस्तको के माध्यम से मुझे खोरठा भाषा साहित्य की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। इस दौरान मैं पढ़कर काफी प्रभावित हुआ और फिर मुझे लगा कि अगर शोध कार्य करने का अवसर मिला तो मैं भी [kksjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk% ,d v/;;u विषय पर शोध करने का कोशिश करूंगा, ताकि आने वाले नए पिढ़ियों को इस शोध कार्य से कुछ जानकारियाँ उपलब्ध करा सकूँ।

मैंने शोध विषय की चर्चा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खोरठा के विभागाध्यक्ष डॉ0 कुमारी शशि, सहायक प्राध्यापिका डॉ0 अर्चना कुमारी, डॉ0 दिनेश दिनमणी, डॉ0 निरंजन कुमार, डॉ0 नकुल कुमार शोध निदेशक डॉ0 अरविन्द कुमार एवं अन्य प्राध्यापकों के बीच सम्पर्क स्थापित किया, सभी ने [kksjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk % ,d v/;;u विषय पर शोध करने का दिशा निर्देश दिया। तब मैं भी इस शोध विषय पर शोध करने का निर्णय लिया। अब मैं इमान्दारी से अपना इस विषय पर शोध करने का प्रयास करूंगा।

'kks/k dk mn~ns';

किसी भी शोध कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व शोध से सम्बंधित उद्देश्य का निर्धारण किया जाता है। इस शोध प्रस्ताव का निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. खोरठा भाषा का उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना।

2. खोरठा भाषा व साहित्य का गहन अध्ययन करना।

3. खोरठा भाषा–साहित्य जगत में आने वाले शोधार्थियों के लिए सुचना संकलन, संग्रहण एक विशलेषण करना।

4. खोरठा भाषा, कला, साहित्य एवं संस्कृत का क्षेत्र विस्तार करना।

5. खोरठा गीतों में अलंकार योजना को संग्रहित करना।

'kks/k dk egRo

1. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा तथा नई जागृति उत्पन्न होगा।

2. इस शोध प्रबंध के माध्यम से समस्त खोरठा भाषा–भाषियों, समाज के कवियों और साहित्यकारों का सम्मान बढ़ेगा।

3. क्षेत्रीय भाषा के पाठक अपनी समृद्ध भाषा से परिचय प्राप्त करेंगे जिससे भाषा एवं साहित्य का प्रचार व्यापक पैमानें पर संभव हो सकेगा।

'kks/k fof/k

प्रस्तावित शोध प्रारूप के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधि का आवश्यकतानुसार उपयोग किया जाएगा।

1. साक्षात्कार विधि

2. विश्लेषणात्मक विधि

3. वर्णात्मक विधि

4. अवलोकन विधि

उपर्युक्त शोध विधि के अलावे आवश्यकतानुसार अन्य शोध विधि का प्रयोग किया जा सकता है।

'kk/k midj.k

1. कैमरा

2. कम्प्यूटर

3. लैपटॉप

4. पेनड्राइव

5. इंटरनेट का प्रयोग आदि।

6. स्मार्ट फोन

'kks/k & ik:i

[kksjBk xhrksa esa vyadkj ;kstuk % ,d v/;;u

iFke v/;k;

खोरठा गीतों का सामान्य परिचय :

क) लोकगीत
   i. परिचय
   ii. स्वरूप और भेद

ख) शिष्ट गीत
   i. परिचय
   ii. स्वरूप
   iii. इतिहास

f}rh; v/;k;

अलंकारों का सामान्य परिचय :

(क) अलंकार की परिभाषा

(ख) अलंकार का महत्व

i. अलंकार की परम्परा
ii. अलंकार की महत्ता

(ग) अलंकार के प्रकार

i. शब्दालंकार
ii. अर्थालंकार
iii. उभयालंकार

r`rh; v/;k;

खोरठा गीतों में शब्दालंकार :

(क) लोक गीतों में

(ख) शिष्ट गीतों में

pr|Fk v/;k;

खोरठा गीतों में अर्थालंकार :

(क) लोक गीतों में अर्थालंकार

(ख) शिष्ट गीतों में अर्थालंकार

i|pe v/;k;

खोरठा गीतों में उभयालंकार :

(क) लोक गीतों में उभयालंकार

(ख) शिष्ट गीतों में उभयालंकार

"k"V v/;k;

खोरठा गीतों में अलंकार योजना में लोकतत्वों का समावेश :

क) लोकतत्व की अवधारणा

ख) खोरठा क्षेत्र का लोक परिवेश और लोक तत्व

ग) खोरठा गीतों में लोकतत्व का प्रयोग–

i. लोक गीतों में
ii. शिष्ट गीतों में

lIre v/;k;

1) खोरठा गीतों में अलंकार योजना की विशिष्टताएँ और उपलब्धियाँ :

'kks/k fu"d"k

- आधार ग्रंथों की सूची
- संदर्भ ग्रंथों की सूची
- समाचार पत्रों की सूची
- चित्रावली
- पत्र–पत्रिकाओं की सूची

नोटः–प्रस्तावित शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किए जा सकते है।

शोध निर्देशक

डॉ0 अरविन्द कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा विभाग
डोरन्डा महाविद्यालय, राँची।

शोधकर्त्ता

सुमित भारती
एम0ए0 खोरठा
यू0जी0सी0 नेट
खोरठा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची।

vk/kkj xzFkk dh lwph

1	ए0के0 डॉ0 झा	छंद रस अलंकार	झारखण्ड झरोखा	2011
2	कुमारी डॉ0 अर्चना	खोरठा का शिष्ट साहित्य एक अध्ययन	प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची	2015
3	ए0के0 डॉ0 झा	खोरठा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा, राँची	2012
4	दांगी डॉ0 आनंद किशोर	खोरठा कवियों का काव्यगत परिचय	झारखण्ड झरोखा, राँची	
5	ओहदार डॉ0 बी0एन0	खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्भव एवं विकास)	खोरठा भाषा साहित्य अकादमी	
6	ओहदार डॉ0 बी0एन0	सम्पूण्र खोरठा भाषा एवं साहित्य	मार्गदर्शन पब्लिकेशन, राँची	2018
7	दिनमणि दिनेश कुमार	आधुनिक खोरठा बेयाकरन	शिवांगन पब्लिकेशन, राँची	2021
8	प्रभाकर डॉ0 गजाधर महतो	खोरठा भाषा साहित्य	सफल प्रकाशन, राँची	2017
9	सुधाकर महेन्द्र नाथ गोस्वामी	लालकोठी	झारखण्ड झरोखा, राँची	2020
10	ए0के0 डॉ0 झा	एक टौकी फूल		1983
11	भारत शांति	बेलंदरी		1991
12	बिहारी बासु	कोरोया फूल		1998
13	सुकुमार	पइन सोखा		1995
14	सुकुमार	सेंवाती		1996
15	दिनमणि दिनेश कुमार	सोहान लागे रे		2006
16	गरीब शिवनंदन पांडेय	खोरठा लोकगीत		1995
17	संयुक्त संपादन	खोरठा लोक साहित्य		2011

lanHkZ xzaFk dh lwph

1	ओहदार डॉ0 बी0एन0	खोरठा भाषा साहित्य (उद्भव एवं विकास)	मार्ग दर्शन पब्लिकेशन, राँची	2007
2	ओहदार डॉ0 बी0एन0	खोरठा लोक साहित्य	रामगढ़	2007
3	कुमारी डॉ0 अर्चना	खोरठा शिष्ट कथा साहित्य : एक अध्ययन	प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन राँची	2015
4	कुमार प्रो0 डॉ0 बिनोद	सोंध–माटी	जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार, राँची	1990
5	गौंझू डॉ0 गिरिधारी राम	झारखण्ड का लोक संगीत	झारखण्ड झरोखा, राँची	2015
6	चित्रा, चितरंजन महतो	छांहइर	खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़	2007
7	ए0के0 डॉ0 झा	रस छंद अलंकार	बोकारो	2011
8	ए0के0 डॉ0 झा	खोरठा सहित सदानिक व्याकरण	झारखण्ड झरोखा, राँची	2010
9	ए0के0 डॉ0 झा	खोरठा काठेक गइदेक खड़ी	राँची	1983
10	बंशी बंशीलाल	खोरठा भाषा साहित्य (उद्भव एवं विकास)	चास बोकारो	1992
11	महतो, पंचम	खोरठा लोक साहित्य	बालीडीह खोरठा कमिटी, बोकारो	2001
12	प्रमाणिक, शिवनाथ	खोरठा शिष्ट कथा साहित्य : एक अध्ययन	खोरठा साहित्य–संस्कृति परिषद्, बोकारो	2004
13	सुधाकर, एन0एम0 गोस्वामी	सोंध–माटी	आभास आपन भाषा–संस्कृति गुनघसा, धनबाद	2011

[kkjBk i= ,o if=dk,¡

1	श्रीनिवास पानुरी	मातृभाषा	बरवाअडडा धनबाद	1957
2	श्रीनिवास पानुरी	खोरठा		1970
3	विश्वनाथ दसौंधी राज	तितकी	कतरासगढ़ धनबाद	1977–78
4	धनंजय प्रसाद	इंजोर	मधुपुर, देवघर	1997
5	धनंजय प्रसाद	प्रभा रशिम	देवघर	1998–99
6	गिरिधारी गोस्वामी ''आकाश खूँटी''	लुआठी	बासीडीह, बोकारो	1999
7	अनिल कुमार ''विस्थापित''	सहिया	बोकारो	2002
8	फाल्गुनी मरीक कुशवादा	साहिदान	गिरिडीह	2002
9	बी0एन0 ओहदार	करील	ओरमांझी, राँची	2009
10	श्रीनिवास पानुरी	परास फूल	धनबाद	2009
11	श्रीनिवास पानुरी	धरतीथान	गिरिडीह	2009